जमुनिया

तस्वीर बदलते भारत की

जमुनिया गांव की एक महिला है। उसका पति किसान था। पति की मृत्यु के बाद जमुनिया के साथ बड़ा अन्याय हुआ। बेटी चिड़ैया के साथ उसे परिवार से अलग कर गांव से निकाल दिया गया। गांववालों ने साजिश कर उसके पति के खेत भी छिन लिये और उसके बेटे मुन्ना से जमुनिया को अलग कर दिया। जमुनिया हैरान है - लोगों को अधिकार से क्यों वंचित कर दिया जाता है, और लोग क्यों अपने अधिकार के बारे में पूछने से डरते हैं।

भोजन और जीविका की तलाश में जमुनिया दूसरे गांव जा पहुंचती है। गांव के एक बुजुर्ग झुल्लन के यहां सहारा मिलता है। झुल्लन के बच्चे अच्छी जिंदगी जीने के लिए उसे छोड़कर शहरों में बस गये हैं। इस बीच जमुनिया की सहेली शारदा गांव में किसी तरह की चिकित्सा सुविधा के अभाव में बच्चे को जन्म देने के दौरान मर जाती है। गांववाले उसे शहर के अस्पताल भी नहीं पहुंचा पाते क्योंकि गांव में न तो सड़क थी और न ही किसी तरह का वाहन उपलब्ध था। गांववालों ने जब शारदा को अस्पताल ले जाने के लिए जमींदार दिवानजी से ट्रैक्टर मांगा तो उन्होंने किसी तरह की मदद करने से इनकार कर दिया। जमुनिया बेहद निराश है। उसने उसी वक्त ठान लिया कि अब गांव में कोई शारदा नहीं मरेगी और जल्दी ही हालात बदलेंगे। उसने सेवानिवृत्त गांव के गुरुजी से पढ़ना शुरू कर दिया। उसने ठान लिया था कि अब वह मदद के लिए किसी और पर निर्भर करने की बजाय सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएगी।

जमुनिया अब बदल चुकी है। विभिन्न नियम-कायदों और सरकार की योजनाओं की उसे जानकारी हो गई है। जमींदार के प्रभाव और गांववालों के विरोध के बावजूद वह सरपंच बनने में सफल हो जाती है। दिवानजी जैसे विरोधियों और तमाम अवरोधों से घबराकर कभी वह सब कुछ छोड़ देने का भी मन बना लेती है। लेकिन वह मैदान से भागने वालों में नहीं है। उसे भारत निर्माण के तहत चल रही योजनाओं से प्रेरणा मिलती है। भारत निर्माण के कार्यक्रम से पूरे देश में बदलाव की लहर चल पड़ी है। जमुनिया एक सपना देखती है - ऐसा गांव जिसमें सभी वयस्क शिक्षित हों, उन्हें काम मिला हुआ हो, स्वस्थ रहें और सबको समान अवसर उपलब्ध हों। जमुनिया सुनिश्चित करती है कि सरकार की सभी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ उसके गांव तक जरूर पहुंचे। चुनौतियों का सामना करने के लिए वह भारत सरकार के कार्यक्रमों को हथियार बनाती है। नागरिकों को समानता और बेहतर जिंदगी देने का मौका सुनिश्चित करने वाले इन कार्यक्रमों की उसे बखूबी जानकारी है। जमुनिया का बस एक ध्येय वाक्य है - 'सपना नहीं सच है, अब ये मेरा हक है'।

एक दिन ऐसा आता है जब गांव का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण शिक्षित हो जाता है और जमुनिया कल तक असंभव प्रतीत हो रहे लक्ष्यों को भी हासिल करने में सफल हो जाती है। 'छूना है आसमान...' की धुन गुनगुनाते हुए 26 जनवरी को गांव में माध्यमिक विद्यालय के साथ अस्पताल भी खुल जाता है। अपने गांव को आदर्श गांव बनाने का जमुनिया का सपना सच हो चुका है। जमुनिया को अब अपने गांव की याद आती है जहां उसे जमीन से बेदखल कर दिया गया था। बेटे से अलग करते हुए उसे प्रताड़ित कर गांव से निकाल दिया गया था। जमुनिया को उसका बेटा और जमीन वापस मिलने पर पूरा गांव खुशी से झूम उठता है।

जमुनिया का सपना भारत के सपने को प्रतिबिम्बित करता है। जिस तरह जमुनिया ने अपनी किस्मत बदली वही बदलाव भारत में भी नजर आया। इस बदलाव को दिशा दी भारत सरकार ने और यह परिवर्तन अच्छे भविष्य के लिए है। आखिर जब गांव खुश होता है तभी भारत भी खुश होता है।

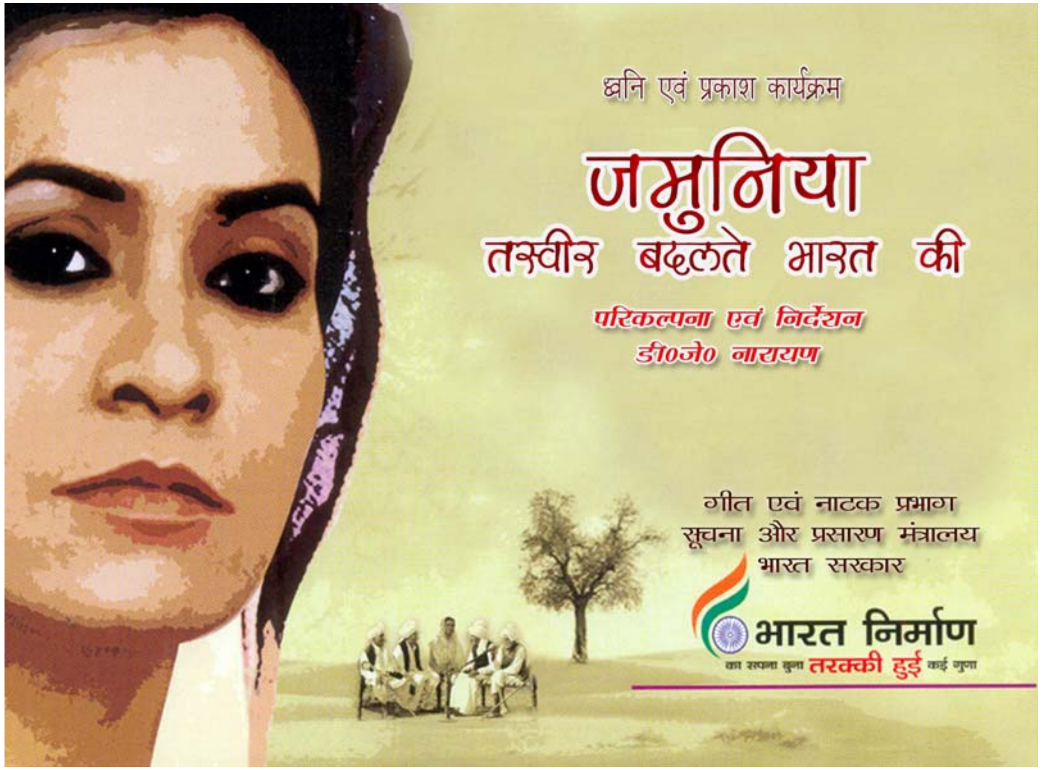

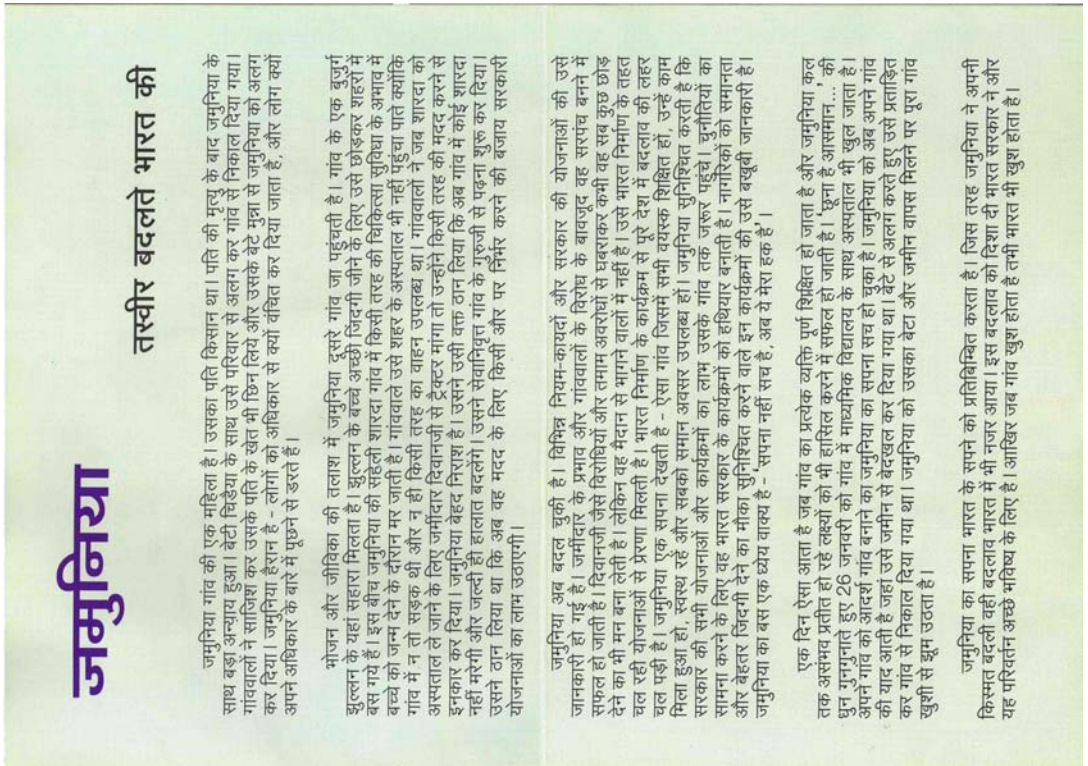

जमुनिया

तस्वीर बदलते भारत की

जमुनिया गांव की एक महिला है। उसका पति किसान था। पति की मृत्यु के बाद जमुनिया के साथ बड़ा अन्याय हुआ। बेटी चिडैया के साथ उसे परिवार से अलग कर गांव से निकाल दिया गया। गांववालों ने साजिश कर उसके पति के खेत भी छिन लिये और उसके बेटे मुन्ना से जमुनिया को अलग कर दिया। जमुनिया हैरान है - लोगों को अधिकार से क्यों वंचित कर दिया जाता है, और लोग क्यों अपने अधिकार के बारे में पूछने से डरते हैं।

भोजन और जीविका की तलाश में जमुनिया दूसरे गांव जा पहुंचती है। गांव के एक बुजुर्ग झुल्लन के यहां सहारा मिलता है। झुल्लन के बच्चे अच्छी जिंदगी जीने के लिए उसे छोड़कर शहरों में बस गये हैं। इस बीच जमुनिया की सहेली शारदा गांव में किसी तरह की चिकित्सा सुविधा के अभाव में बच्चे को जन्म देने के दौरान मर जाती है। गांववाले उसे शहर के अस्पताल भी नहीं पहुंचा पाते क्योंकि गांव में न तो सड़क थी और न ही किसी तरह का वाहन उपलब्ध था। गांववालों ने जब शारदा को अस्पताल ले जाने के लिए जमींदार दिवानजी से ट्रैक्टर मांगा तो उन्होंने किसी तरह की मदद करने से इनकार कर दिया। जमुनिया बेहद निराश है। उसने उसी वक्त ठान लिया कि अब गांव में कोई शारदा नहीं मरेगी और जल्दी ही हालात बदलेंगे। उसने सेवानिवृत्त गांव के गुरुजी से पढ़ना शुरू कर दिया। उसने ठान लिया था कि अब वह मदद के लिए किसी और पर निर्भर करने की बजाय सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएगी।

जमुनिया अब बदल चुकी है। विभिन्न नियम-कायदों और सरकार की योजनाओं की उसे जानकारी हो गई है। जमींदार के प्रभाव और गांववालों के विरोध के बावजूद वह सरपंच बनने में सफल हो जाती है। दिवानजी जैसे विरोधियों और तमाम अवरोधों से घबराकर कभी वह सब कुछ छोड़ देने का भी मन बना लेती है। लेकिन वह मैदान से भागने वालों में नहीं है। उसे भारत निर्माण के तहत चल रही योजनाओं से प्रेरणा मिलती है। भारत निर्माण के कार्यक्रम से पूरे देश में बदलाव की लहर चल पड़ी है। जमुनिया एक सपना देखती है - ऐसा गांव जिसमें सभी वयस्क शिक्षित हों, उन्हें काम मिला हुआ हो, स्वस्थ रहें और सबको समान अवसर उपलब्ध हों। जमुनिया सुनिश्चित करती है कि सरकार की सभी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ उसके गांव तक जरूर पहुंचे। चुनौतियों का सामना करने के लिए वह भारत सरकार के कार्यक्रमों को हथियार बनाती है। नागरिकों को समानता और बेहतर जिंदगी देने का मौका सुनिश्चित करने वाले इन कार्यक्रमों की उसे बखूबी जानकारी है। जमुनिया का बस एक ध्येय वाक्य है - 'सपना नहीं सच है, अब ये मेरा हक है'।

एक दिन ऐसा आता है जब गांव का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण शिक्षित हो जाता है और जमुनिया कल तक असंभव प्रतीत हो रहे लक्ष्यों को भी हासिल करने में सफल हो जाती है। 'छूना है आसमान...' की धुन गुनगुनाते हुए 26 जनवरी को गांव में माध्यमिक विद्यालय के साथ अस्पताल भी खुल जाता है। अपने गांव को आदर्श गांव बनाने का जमुनिया का सपना सच हो चुका है। जमुनिया को अब अपने गांव की याद आती है जहां उसे जमीन से बेदखल कर दिया गया था। बेटे से अलग करते हुए उसे प्रताड़ित कर गांव से निकाल दिया गया था। जमुनिया को उसका बेटा और जमीन वापस मिलने पर पूरा गांव खुशी से झूम उठता है।

जमुनिया का सपना भारत के सपने को प्रतिबिम्बित करता है। जिस तरह जमुनिया ने अपनी किस्मत बदली वही बदलाव भारत में भी नजर आया। इस बदलाव को दिशा दी भारत सरकार ने और यह परिवर्तन अच्छे भविष्य के लिए है। आखिर जब गांव खुश होता है तभी भारत भी खुश होता है।

चुनाव कार्यालय

राशनकीदुकान

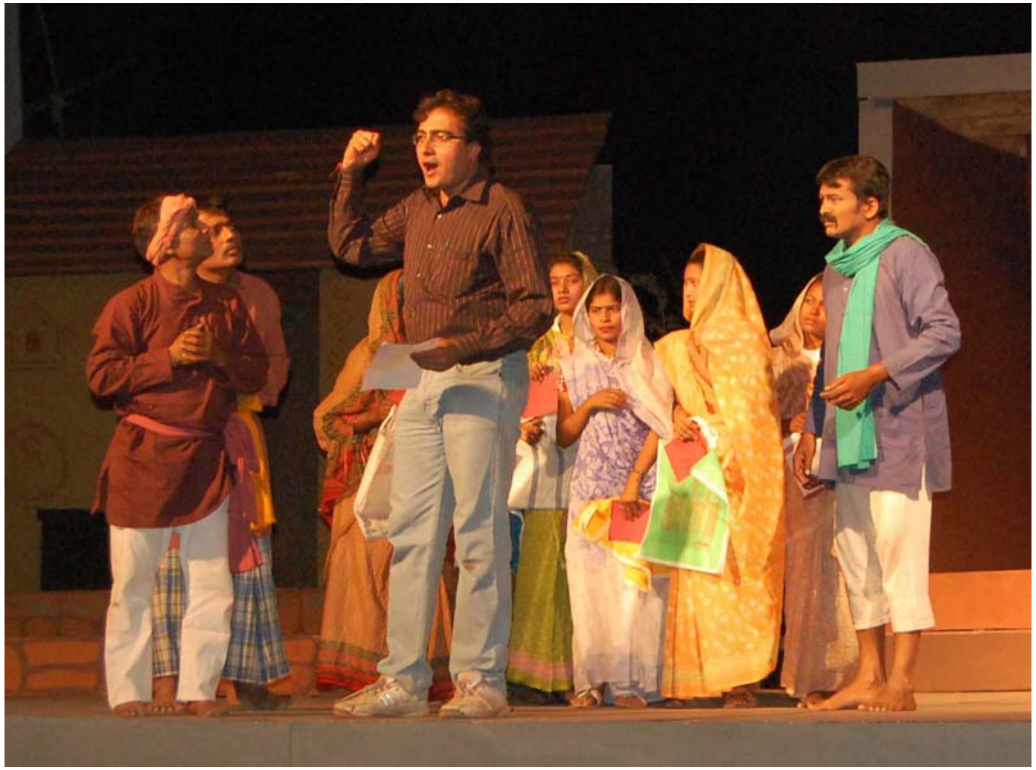

पंचायत भवन

पंचायत भवन
दानापुर

दानापुर मिडिलस्कूल

दानापुर मिडिलस्कूल

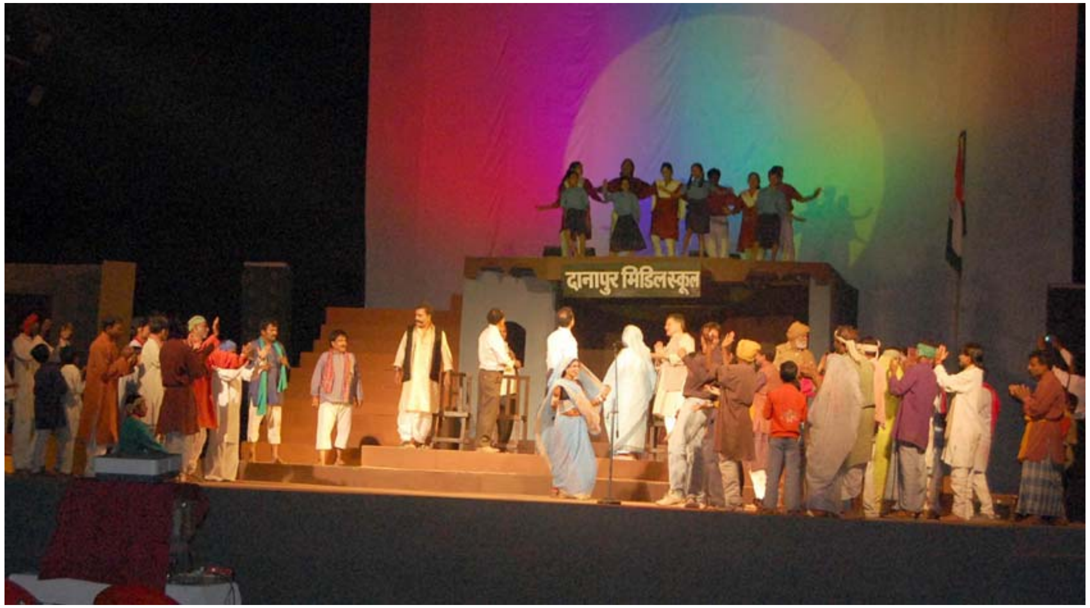
दानापुर मिडिलस्कूल

दानापुर मिडिलस्कूल

दानापुर मिडिलस्कूल

दानापुर मिडिलस्कूल

दानापुर मिडिलस्कूल

दानापुर मिडिलस्कूल
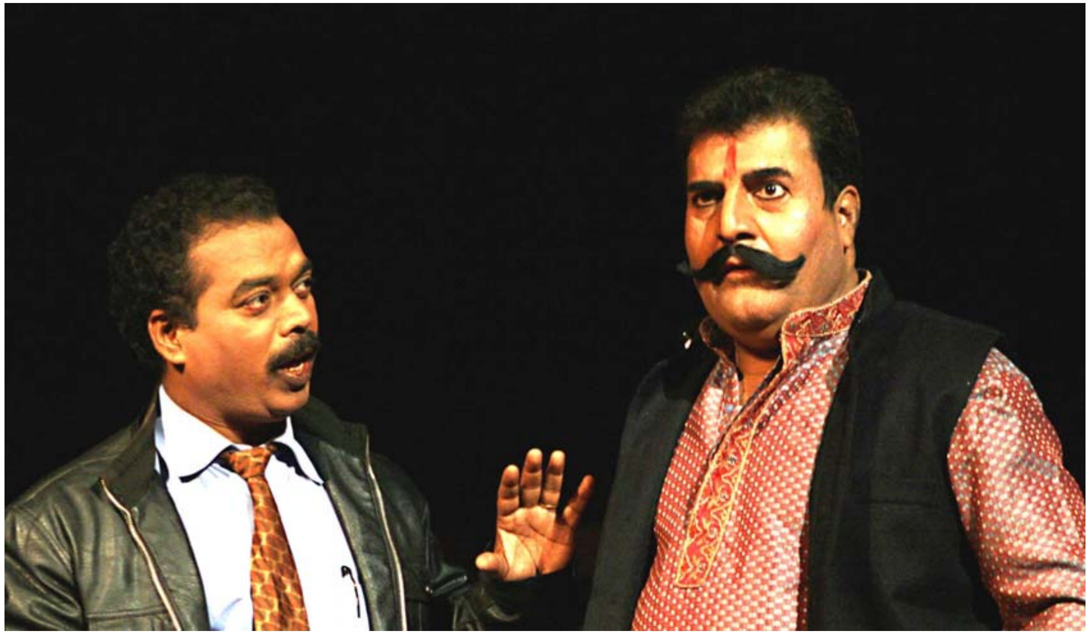
सामुदायिक
दानापुर